

विद्या विनय के साथ बल भी यहाँ संयम साथ है।
अज्ञान तम ग्रसता न मन होती न संशय रात है।
तत्त्वज्ञ होकर भी बनें प्रभु भक्ति के प्रतिमान हैं।
निर्लिप्त एषाहीन अति पुरुषार्थ प्रिय हनुमान हैं। ।

शिव कुमार मिश्र

भोपाल

23:04:2024

हनुमान प्राकट्य दिवस पर शुभ कामना।